International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(III), April - June, 2023, pp. 69-73

# शिक्षा में नवाचार का महत्व

डॉ. अनीता यादव*

## प्रस्तावना

### नवाचार का अर्थ और परिभाषा (Meaning & Definition)

नवाचार शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। नव+आचार। नव का अर्थ है नया और आचार का अर्थ है आचरण या परिवर्तन।

नवाचार वह परिवर्तन है।जो पूर्व स्थित विधियों आदि में नवीनता का संचार करता है। नवाचार शब्द अंग्रेजी के इनोवेशन शब्द के इनोवेट शब्द से बना हुआ। जिसका अर्थ होता है नवीनता लाना या परिवर्तन लाना। नई तकनीकी, नए कार्य, नई सेवा नया उत्पाद आदि नवाचार को अर्थ तंत्र का सारथी माना जाता है।शैक्षिक नवाचार में क्रियाशीलता एवं प्रायोगिकता की प्रवृत्ति विद्यमान होती है। शैक्षिक नवाचार का संबंध प्रमुख रूप से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी एवं रूचिपूर्ण बनाने से होता है। नवाचार का संबंध नवीन तकनीकी एवं नवीन ज्ञान से होता है इसका प्रयोग अध्यापक द्वारा शिक्षण प्रक्रिया में किया जाता है।

### नवाचार की परिभाषा (Definitions of Innovation)

नवाचार की परिभाषा विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के अनुसार निम्नलिखित हैं।

ई.एस रोजर्स के शब्दों में–ः "नवाचार वह विचार हैं जिसकी प्रतीति, व्यक्ति नवीन विचारो के रूप में करे।"

एच . जी वारनेट के शब्दों में–ः "नवाचार एक विचार है व्यवहार है अथवा पदार्थ है जो नवीन है और वर्तमान स्वरूप से गुणात्मक दृष्टि से भिन्न है।"

### नवाचार के प्रकार (Types of Innovation)

नवाचार के प्रकार निम्नलिखित हैंः–

- तकनीकी नवाचार।
- उत्पाद और सेवा नवाचार।
- रणनीति और संरचनात्मक नवाचार।
- सांस्कृतिक अभिनव।

### नवाचार की विशेषताएं (Characteristics of Innovation)

नवाचार की विशेषताएं निम्नलिखित हैः–

- शिक्षा में नवाचार में क्रियाशीलता एवं प्रयोगिगता की प्रवृत्ति उपस्थित होती है।
- यह प्रयास पूर्ण किया जाने वाला कार्य हैं।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, एस.एस.जी. पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

- नवाचार के द्वारा वर्तमान विधियों और परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयास किया जाता हैं।
- शिक्षा में नवाचार के माध्यम से नवीनतम तकनीक को विद्यालय में पहुचाया जाता हैं।
- नवीन शिक्षण तकनीकी के माध्यम से बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव होता हैं।
- शैक्षिक नवाचारों में नवीन तकनीकी का प्रयोग होता है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करती है
- नवाचार के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयत्न किया जाता है।
- शैक्षिक नवाचारओं में क्रियाशीलता एवं प्रायोगिक प्रवृत्ति समान होती है।

**शैक्षिक नवाचार के उद्देश्य**

शैक्षिक नवाचार के उद्देश्य निम्लिखित हैं:–

- शिक्षा में नवाचार के माध्यम से अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाया जाता हैं।
- बालको का सर्वागीण विकास किया जाता हैं। जिससे बालको की अंर्तनिहित शक्तियों का विकास हो सके।
- छात्रों और शिक्षकों का नवीनतम वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो सके। जिससे वो अंधविश्वास और कुरूतियो से दूर रहे।
- शिक्षा में शिक्षण नवाचारों के प्रयोग का मुख्य उद्देश्य शिक्षा व्यवस्था को विश्व स्तरीय प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ना।

**नवाचार का महत्व** (Importance of Innovation)

नवाचार का महत्व नीचे दिए गए निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा समझाया गया है:–

- मूल्य शिक्षा के क्षरण को रोकने के लिए।
- सांप्रदायिक सद्भाव बढाना।
- परिवर्तन के अनुसार शिक्षा पप्रणाली
- अनेक समस्याओं का समाधान।
- क्रियाशिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता के लिए।
- ज्ञान का स्थायित्व।
- शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षण।
- अधिगम सामग्री के प्रयोग के लिए।
- छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए कौशलों का विकास के लिए।
- नवीन शिक्षण विधियों के ज्ञान हेतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।
- शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए।
- अनुसंधान के लिए।

**मनोविज्ञान सिद्धांतों के प्रयोग के लिए शैक्षिक नवाचार की आवश्यकता**

शैक्षिक नवाचार की आवश्यकता निम्नलिखित हैं:–

- कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए।
- तीव्र आर्थिक विकास हेतु।
- जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु।
- मानव संसाधन का विकास करने हेतु।
- सामाजिक परिवर्तन के अनुसार शिक्षा।
- रोजगार के अवसरों में वृद्धि हेतु।

**शैक्षिक नवाचार का क्षेत्र**

शैक्षिक नवाचार के कुछ प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैंः–

- शिक्षण अधिगम।
- मूल्यांकन।
- पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप
- सामुदायिक सहभागिता।
- विद्यालय प्रबंधन।
- विषय गत कक्षा –शिक्षण एवं समसामयिक दृष्टिकोण।

शैक्षिक नवाचार शिक्षा की विकासोन्मुख रहने वाली प्रक्रिया को प्रदर्शित करने वाली एक नवीन अवधारणा है। नवाचार शब्द का प्रयोग वैज्ञानिक विकास के युग में शैक्षिक तकनीकी के नवीन प्रावधानों के कारण शैक्षिक नवाचार का महत्त्व और बढ़ गया है। अन्तर्राष्ट्रीयता, वैश्वीकरण और जनसंचार के आधुनिक संसाधनों ने इसे आज के युग की एक आवश्यकता के रूप में स्थापित कर दिया है। नव का अर्थ है नवीन या नया और आचार का अर्थ होता है व्यवहार अथवा रहन–सहन। आचार को चलन अथवा प्रचलन भी कहा जा सकता है। इस आधार पर शैक्षिक नवाचार को शिक्षा के नवीन प्रचलित व्यवहारों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। शिक्षा के उक्त प्रचलित व्यवहारों के अन्तर्गत उन सभी नवीन अवधारणाओं, विचारों, विधियों, सिद्धान्तों, प्रयोगों और सूचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है जो शिक्षाविदों के आधुनिकतम चिन्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई हैं। इस प्रकार नवाचार शैक्षिक तकनीकी के रूप में शिक्षा दर्शन, मनोविज्ञान और विज्ञान आदि शिक्षा के समस्त पहलुओं को प्रभावित करता है।

**शैक्षिक नवाचार की भूमिका**

शैक्षिक नवाचार का कार्य मानवीय तथा गैर–मानवीय संसाधनों का शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये यथासम्भव कम से कम धन व श्रम को व्यय करके अधिक से अधिक उपलब्धि प्राप्त करना है। अतः प्रबन्ध का कार्य भी एक शैक्षिक कार्य ही कहा जाएगा। जब वह पूरे विद्यालय की शिक्षा की व्यवस्था करता है, तो शैक्षिक नवाचारों को विद्यालय में प्रविष्ट कराने का भी उसका कुछ न कुछ दायित्व अवश्य बनता है। यहाँ पर प्रबन्ध का कुछ न कुछ दायित्व इसलिये कहा है कि शैक्षिक नवाचारों का सैद्धान्तिक पक्ष शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के कार्यक्षेत्र में आता है, किन्तु उन्हें विद्यालय में लागू करने और प्रचलित करने में प्रबन्ध का पर्याप्त योगदान रहता है।

किसी शैक्षिक नवाचार को विद्यालय में लागू करना है, या नहीं, यदि करना है तो किस सीमा तक लागू करना है और किस प्रकार लागू करना है, इस कार्य का उत्तरदायित्व बहुत कुछ प्रधानाचार्य और अध्यापकों पर ही होता है, किन्तु यदि इसमें प्रबन्ध–तंत्र का सहयोग और समर्थन उनके साथ हो तो शैक्षिक उन्नयन की दृष्टि से बहुत उत्तम होता है। ऐसी स्थिति में प्रबन्धकों, प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों को मिल कर कोई समुचित हल निकालना चाहिये। जहाँ तक सम्भव हो, ऐसे प्रयास किये जाने चाहिए, जिनसे विद्यालयों को शैक्षिक नवाचारों से वंचित न रहना पड़े।शैक्षिकनवाचारों को सामान्यतया क्षेत्र की सीमा में बांधना कोई आसान कार्य नहीं है। जिस प्रकार शिक्षा की कोई सीमा नहीं होती, उसी प्रकार शैक्षिक नवाचार भी गिनाये नहीं जा सकते। कभी–कभी कोई नवीन चिन्तन अथवा विचार किसी भी प्रकार के शैक्षिक नवाचार को जन्म दे सकता है।

शैक्षिक नवाचार के क्षेत्र में अनेक अनुसंधान होते रहते हैं। इसी प्रकार भारत सरकार की नयी शिक्षा नीति– 1986 में 1023 शिक्षा शैक्षिक नवाचार संरचना, अल्पसंख्यकों–पिछड़े व वंचितों की शिक्षा, सतत् शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, ग्रामीण विद्यालयों के विकास, दूरस्थ शिक्षा व मुक्त विद्यालयों की स्थापना, धर्म निरपेक्षता और साक्षरता को लागू करने की बात कही है। इस दृष्टि से विद्यालयों के लिये शैक्षिक नवाचारों के क्षेत्र व भूमिका को निम्न रूप में वर्णित किया जा सकता है–

- अनिवार्य सरकारी नीतियों के अन्तर्गत आने वाले शैक्षिक नवाचारों को लागू करना। इसमें शिक्षा संरचना, पाठ्यक्रम, प्रवेश प्रक्रिया आदि को शामिल किया जा सकता है।
- विद्यालय प्रबन्ध में प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों की सहभागिता पर विचार करना।
- सम्मेलनों, सेमिनारों, गोष्ठियों में प्रस्तावित किये गये नवाचारों पर विचार करना।
- लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने में नवीन तथ्यों का समावेश करना।
- परीक्षा प्रणाली एवं व्यवस्था में परिवर्तन करना।
- पाठ्यक्रम में संशोधन करना।
- नये–नये व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लागू करना।
- शैक्षिक तकनीकी में होने वाले परिवर्तनों को विद्यालय में प्रचलित करना।
- अभिक्रमितअनुदेशन, शिक्षण मशीन तथा कम्प्यूटर सह अनुदेशन आदि विधियों को लागू करना।
- कठोर एवं कोमल सामग्री तकनीकी को प्रोत्साहित करना।
- सूक्ष्म शिक्षण की व्यवस्था करना।
- समाज सेवा, साक्षरता अभियान एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रबन्ध करना।
- सूचना तकनीकी का प्रयोग करना।
- विद्यालय के विकास के लिये नवीन भवनों, विभागों आदि की स्थापना पर विचार करना।
- राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव और वैश्वीकरण से सम्बन्धित सूचनाओं तथा ज्ञान
- सर्व शिक्षा अभियान, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम तथा सभी के लिये शिक्षा की योजनायें लागू करना।
- अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक मानकों पर विचार करना।
- निर्देशन व परामर्श की नवीन तकनीकों का समावेश करना।
- मनोरंजक शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

**नवाचार शिक्षण पद्धतियां** (Innovative Teaching Practices)

वर्तमान समय में शिक्षा पूर्णतया निःशुल्क एवं बालकेन्द्रित है। हमारी सरकार के द्वारा विद्यालय को सभी भौतिक सुविधायें उपलब्ध करायी जा चुकी हैं, जैसे –विद्यालय भवन, विद्युत व्यवस्था, पाठ्यपुस्तकें, स्कूल यूनीफार्म, मध्यान्ह भोजन, छात्रवृत्ति, शिक्षण अधिगम सामग्री के लिए धनराशि आदि। इन सभी सुविधाओं से विद्यालयों में विद्यार्थियों के नामांकन संख्या में वृद्धि हुई है। परन्तु गुणवत्तापरक शिक्षा में अभी भी आशानुरूप सफलता नहीं मिली है। जहॉ संख्यात्मक वृद्धि (quantity) होती है, वहां गुणात्मक वृद्धि (quality) में कमी आ जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि कक्षा में रूचिपूर्ण शिक्षण पद्धति अपनाई जाये जैसे– भ्रमण विधि, खेल विधि, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि, करके सीखना, प्रोजेक्ट विधि, केस स्टडी विधि तथा विभिन्न प्रकार की अन्य शैक्षिक गतिविधियां आदि। इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से शिक्षण कार्य करने में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए ही शिक्षण अधिगम एक रूचिपूर्ण प्रक्रिया बन सकेगी। इन पद्धतियों में शिक्षक एक सलाहकार /सुगमकर्ता के रूप में कार्य करेगा तथा विद्यार्थी को कार्य करके सीखने का अवसर प्रदान करेगा। इस प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के प्रमुख उद्देश्य हैं, कि बच्चों के पुस्तकीय ज्ञान को उनके बाहरी जीवन से जोड़ा जाये, और वर्तमान शिक्षा नीति 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इसी बात पर जोर दिया गया है। यह उद्देश्य भी इन पद्धतियों से प्राप्त हो सकेगा। भयमुक्त वातावरण में विद्यार्थी स्वतंत्र होकर अपना कार्य सुगमता से कर सकता है। जिससे उनमें अभिव्यक्ति, अन्वेषण, निर्णय लेने, स्व मूल्यांकन करने की क्षमता तथा सृजनात्मक, रचनात्मक, आत्मविश्वास आदि कौशलों का विकास हो सकेगा।

**परिवर्तन एवं नवाचार में संबंध** (Relationship between Change and Innovation)

परिवर्तन और नवाचार दोनों ही शिक्षा पर प्रभाव डालते हैं और शिक्षा द्वारा प्रभावित होते हैं इससे निम्न बिन्दुओं द्वारा समझाया जा सकता है।

- सुधार की दृष्टि से शैक्षिक परिवर्तन की इच्छा
- नवाचार का चयन नवाचार के प्रयोग में लाने के लिए साधनों का आयोजन करना।

अतः नवाचार और परिवर्तन दोनों में घनिष्ठ संबंध है और शिक्षा में इनसे सुधार लाया जा सकता है।

**परिवर्तन और नवाचार** (Change and Innovation)

परिवर्तन सार्वभौमिक, सार्वकालीन एवं सर्वव्यापक होता है। परिवर्तन के कारण ही पृथ्वी का निर्माण हुआ है। परिवर्तन के कारण ही प्रकृति विकास एवं विनाश का चक्र गतिमान है। परिवर्तन प्रत्येक बदलाव या विचलन को कहा जा सकता है, चाहे वह सकारात्मक या नकारात्मक या अच्छा हो या बुरा ।परिवर्तन और नवाचार को अधिकतर समान अर्थ में प्रयुक्त करते हैं क्योंकि दोनों ही स्थापित परंपरा प्रणाली वस्तु या विचार में बदलाव लाता है। हालांकि परिवर्तन एक व्यापक धारणा है जिसमें अच्छे या बुरे दोनों प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित होते हैं। जबकि नवाचार सदैव अच्छा सकारात्मक, सुधारात्मक एवं रचनात्मक होता है और इसके फलस्वरूप शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार आता है। इसीलिए परिवर्तन और नवाचार दोनों में घनिष्ठ रूप से संबंध होते हुए भी एक हैं।

**निष्कर्ष**

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नवाचार शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास तो होगा ही साथ ही उनका सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन भी हो सकेगा। नवाचार वह विचार है जिसके माननीय विकास को स्वीकार करने वाला उसे नवीन विचार के रूप में देखता और अनुभव करता है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. https%//wando Knowledge-com
2. https%//WWW-jagran-com
3. https%//Hindi Amrit-com
4. https%//sarkariguider-com
5. https%//www-prumary kamaster-com
6. शैक्षिक तकनीकी–ः डॉ.एस.पी कुलश्रेष्ठ
7. शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार–ः डॉ. एस.पीकुलश्रेष्ठ
8. शैक्षिक तकनीकी के आयाम–ः रमेश प्रसाद पाठक
9. शिक्षण तकनीकी की रूपरेखा–ः मोहम्मद जाहिद हुसैन

❖◆❖